International Research Journal of Human Resources and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor- 5.414, Volume 4, Issue 10, October 2017
Website- www.aarf.asia, **Email** : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

बौद्ध साहित्य में यक्ष

डॉ. सुदेश कुमारी
असिस्टेंट प्रोफेसर
ज्ञान भारती कॉलेज ऑफ एजूकेशन, इन्द्री, करनाल ।

'यक्ष' शब्द पालि में 'यक्ख' कहा जाता है जिसकी व्युत्पत्ति पालि व्याख्याकर्त्ताओं के अनुसार यज धातु से बलि (Sacrifice) देने के अर्थ में हुई है ।[1] अत: यजन्ति तत्था (Tattha) बलिं उपहरन्ति ति यक्खा'[2] एवं 'पूजनीय भावतो यक्खो, ति उच्चति ।[3] बौद्ध-साहित्य में इनको मानव जाति से नहीं माना गया है और इन्हें देवों के समान उन्नत भी नहीं माना गया है । इन्हें अधिकतर अमानुष कहा गया है एवं देव, राक्षस, दानव, गन्धब (गन्धर्व) किन्नर एवं महोरग आदि के साथ ही इनका वर्णन हुआ है ।[4] इन्हें प्रेतों से उच्च माना गया है तथापि कुछ अच्छे प्रेतों को भी यक्ष कहा गया है ।[5] कहीं-कहीं पर उनको अमानुष व गन्धर्ब के बीच की श्रेणी में रखा गया है ।[6]

प्राचीन साहित्य में यक्ष नागादि की तरह सामान्य थे परन्तु बौद्ध व जैन साहित्य में इनका महत्त्व इतना बढ़ गया कि वहाँ इनका अत्यधिक वर्णन हुआ है । इसी साहित्य में शक्क (शक्र, इन्द्र)[7]को भी यक्ष कहा है । यहाँ तक कि कुछ काव्यमयी पंक्तियों में बुद्ध को भी यक्ष कहा गया है ।[8] ककुद जैसे देवता को भी यक्ष कह दिया गया ।[9]**जयद्दिशजातक** में चन्द्रमा में अंकित चिह्न को भी यक्ख कह दिया गया है ।[10] इन सबमें से केवल वैश्रवण के अनुयायी ही वास्तव में यक्ख हैं ।

कई स्थलों पर यक्ख से 'सत्त, नर, मानव, पोस, पुग्गल (Puggala) जीव, जगु, जन्तु, इन्दगु, मनुज, आदि अर्थ किये हैं ।[11]

इसके अतिरिक्त यक्षों के लिए 'पिशाच' व 'राक्षस' शब्द पयार्य के रूप में मिलता है ।[12]

1. स्वरूप

बौद्ध व जैन साहित्य में यक्षों व उनकी संस्कृति आदि के विषय में बहुत से तथ्य प्राप्त होते हैं । उन सब तथ्यों का यहाँ विभिन्न बिन्दुओं के माध्यम से विश्लेषणात्मक अनुशीलन करने का प्रयास किया जा रहा है, ताकि इनके

© **Associated Asia Research Foundation (AARF)**
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

International Research Journal of Human Resources and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor- 5.414, Volume 4, Issue 10, October 2017
Website- www.aarf.asia, **Email** : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

विभिन्न पक्षों की एक शृंखला बनाई जा सके । सर्वप्रथम उनके स्वरूप व भोजन के विषय में विवेचन किया जाना उपयुक्त है ।

बौद्ध-जैन साहित्य में यक्षों का अधिकतर मानवीय रूप ही पाया जाता है । परन्तु साथ ही साथ उनके असामान्य रूप के वर्णन भी उपलब्ध होते हैं । यहाँ भी उन्हें इच्छानुरूप रूप धारण करने की क्षमता वाला दर्शाया गया है । ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार का वर्णन राक्षसों के विषय में उपलब्ध होता है कि वे घोड़ा, बैल, शेर, बाघ आदि के रूप अथवा ये अन्य रूप भी धारण कर सकते हैं ।[13]

इसके अतिरिक्त उनके पास अलौकिक शक्तियाँ भी होती थी। वे एक स्थान से दूसरे स्थान पर इच्छानुसार शीघ्रता से पहुँच सकते थे तथा उनमें विभिन्न रूप धारण करने का सामर्थ्य था । वे अपने को किसी भी रूप में, रंग में बदल सकते थे अथवा वे कोई भी रूप व रंग धारण कर सकते थे । सामान्य रूप में उनकी आँखें लाल होती थी और उनकी पलकें नहीं झपकती थी। उनके निवास स्थान उन्हीं के द्वारा बनाए गए स्थान होते थे जो कहीं पर भी हो सकते थे, हवा में अथवा पेड़ों पर ।

महावंश[14]में कुवण्णा नामक यक्षिणी का भी वर्णन प्राप्त होता है और जो एक सुन्दर कन्या का वेष धारण करके विजय नामक राजा से विवाह कर लेती है, यहीं पर अदृश्य यक्षों का भी वर्णन होता है जिससे उनके अदृश्य होने की विद्या का भी संकेत प्राप्त होता है, इसी प्रकार की विद्या के विषय में कुबेर-प्रसंग में भी वर्णन हुआ है ।

दीघनिकाय[15] में यक्षों का कृष्णवर्ण व लाल आँखों वाला होने का वर्णन मिलता है । यहीं पर वज्रपाणि यक्ष का वर्णन हुआ है जिसमें उसे प्रदीप्त उज्ज्वल शरीरधारी तथा लौहदण्ड धारण किये हुए वर्णित किया है ।[16]

वे रूप बदलने में कुशल होते हैं । जातक कथाओं में खरदाठिक[17] नामक यक्ष का वर्णन है जो ब्राह्मण का वेश धारण कर एक अन्य ब्राह्मण से दान में उनके दोनों बच्चे मांग लेता है। **अप्पणकजातक** कथा[18] में भी ऐसा ही वर्णन है कि अमानुष कान्तार में एक यक्ष रूप बदलकर एक व्यापारी की धोखे से सब खाद्य-सामग्री फिँकवा देता है एवं सब व्यापरियों को खा जाता है।

पंचाबुधजातक कथा[19] में श्लेषलोम यक्ष का वर्णन है जो उसके अधिकृत वन में प्रवेश करने वाले प्रत्येक मनुष्य को खा जाता है। वह भी अपने

International Research Journal of Human Resources and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor- 5.414, Volume 4, Issue 10, October 2017
Website- www.aarf.asia, **Email** : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

सामान्य से विकराल रूप धारण कर बोधिसत्त्व को डराने का प्रयास करता है । वह यक्ष ताड़ के जितना ऊँचा होकर, ग्रह के समान सिर, बड़ी-बड़ी आँखें और कन्दनकली जितने बड़े दांत बना, श्वेतमुख, चितकबरे पेट और नीले हाथ-पांव वाले भयानक रूप को धारण कर लेता है ।

यक्षिणियाँ भी मनुष्यों को लुभाने के लिए सुन्दर रूप धारण कर लेती हैं । वे अमनुष्य-कान्तार में, पथ में ग्राम व शालाएँ बनाकर, ऊपर सुनहरे तारों में सजे हुए मुंडवे, उनके नीचे कीमती पलंग बिछवा, नाना प्रकार रेशमी कनातें लगवा, अपने आपको दिव्य अलंकारों से सजाकर रहती थी । वे जाते हुए आदमी को देखकर उसे मधुर वाणी से आमन्त्रित करती है "आप थके हुए मालूम पड़ रहे हैं यहां आकर, थोड़ा विश्राम करके पानी पीकर जाएँ" । उन मनुष्यों के आने पर वे उन्हें अपने हास-विलास से मुग्धकर, अपने साथ रमण करने पर वहीं उसका रक्त निचोड़कर खा जाती थी ।[20]

इसके अतिरिक्त यक्षिणियों के अश्वमुखी होने का वर्णन भी प्राप्त होता है । एक अश्वमुखी यक्षिणि का उल्लेख **पादकुशलमाणवजातक**[21] में भी हुआ है । **अन्तकृद्दशासूत्र**[22] में नैगमेश यक्ख मृग-मुख के रूप में प्रसिद्ध है । इन विवरणों के आधार पर कहा जा सकता है कि बौद्ध काल तक यक्षों को अत्यन्त क्रूर-सा माना जाने लगा था, उसी के अनुरूप उनके भयावह स्वरूप का वर्णन किया गया है । वे नर-मांस भक्षी थे। उनका वास्तविक स्वरूप अत्यन्त विकराल, भद्दा दर्शाया है, परन्तु वे इच्छारूपधारी थे ऐसा वर्णन हुआ है । इससे ये द्योतित होता है कि वे विभिन्न रूप धारण करने की कला में कुशल थे एवं प्रायः वे सामान्यजन को छल-कपट से मारने व हानि पहुँचाने के लिए अपने वास्तविक रूप को छिपाकर अन्य रूप के अनुसार वस्त्र, वेश-भूषा धारण करते थे ।

2. भोजन

बौद्धकालीन साहित्य में यक्षों के क्रूर व पुण्यशील दोनों छवियों के पक्ष प्राप्त होते हैं । इससे पूर्व भी (महाभारत में) उनका भोजन मांस व रक्त था ऐसा वर्णन मिलता है । परन्तु बौद्ध-काल की अपेक्षा कम है । बौद्ध काल में उनको मांसाहारी ही बताया है । इससे उपर्युक्त वर्णनों से भी यही तथ्य पुष्ट होता है ।

© Associated Asia Research Foundation (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

International Research Journal of Human Resources and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor- 5.414, Volume 4, Issue 10, October 2017
Website- www.aarf.asia, **Email** : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

बौद्ध कथाओं के अनुसार वे कच्चा मांस खाते थे[23] तथा उन्हें मानव भक्षी, रक्त व मांस खाने वाला बताया है ।[24] राजगृह में हारिती नामक मानुष मांस-भक्षी यक्षिणी का वर्णन भी प्राप्त होता है ।

पंचाबुधजातक[25] में श्लेषलोम यक्ष का वर्णन है जो उसके अधिकृत वन में प्रवेश करने वाले प्रत्येक व्यक्ति को खा जाता है । जातक कथाओं से प्रतीत होता है कि यक्षों की अपेक्षा यक्षिणियाँ अमानुषकान्तार में अपना सुन्दर स्वरूप बनाकर यात्रियों को लुभा लेती थी एवं एकान्त में अवसर पाकर उन्हें अपना ग्रास बना लेती थी ।[26]

समुग्गजातक में यक्षिणी का वर्णन है कि एक यक्षिणि रूप बदलकर राजा को मोहित कर लेती है तथा राजा उससे विवाह कर लेता है । वह यक्षिणि अपने जातिवालों को बुलाकर महल में रहने वाली रानियों, राजकुमारों, राजकुमारियों, राजा, उसके रिश्तेदार, सेवक आदि सभी लोगों को खा जाती है । जो पशु महल के अन्दर थे उन सब को भी वह खा जाती है । इससे ज्ञात होता है कि यक्ष-जाति धोखे से लोगों को अपना ग्रास बना लेती थी ।

काशी के लोग परम्परा से यक्षों को पशुओं की बलि देते थे। (यक्षणां बलिकामम्) जातक 459 और जातक 204 में वर्णन है कि वे यक्षों व नागों के लिए भोजन बनाने में असमर्थ थे।[27]

दीघनिकाय में भी अमानुषकान्तर में यक्ष के द्वारा बहुत से व्यापारियों के खा जाने का सन्दर्भ प्राप्त होता है । वह यक्ष वेष बदलकर उस व्यापारी-वर्ग की समस्त भोजन-सामग्री यह कहकर उनकी गाड़ियों से उतरवा देता है कि - आगे आपको तृण-काष्ठ व उदक (भोजन-सामग्री) उपलब्ध हो जाएगा, अतः आप व्यर्थ ही अपनी गाड़ियों का भार न बढ़ाए ।[28] तब वह व्यापारी-वर्ग ऐसा ही करता है परन्तु आगे वन में कोई भी सामग्री उपलब्ध न होने पर, भूखादि से क्षीण होने पर यज्ञ उनको खा जाता है ।

उपर्युक्त विवरणों से यह स्पष्ट हो जाता है कि इस काल तक आते-आते सम्पूर्ण समाज में यक्षों की मांसाहारी होने की छवि गहरी हो गई थी । जैसा कि महाभारत के वर्णनों में इनके मांस के साथ-साथ सामान्य (शाकाहारी) भोजन के ग्रहण करने के भी वर्णन प्राप्त होते रहे हैं, परन्तु बौद्ध-काल में इनके केवल मांसाहारी ही होने के वर्णन है, यहाँ तक कि राजभोजन को भी ये अस्वीकार करके केवल ताजा मांस व नर रुधिर की ही माँग करते हैं । यक्षों की अपेक्षा यक्षिणियाँ अधिक क्रूर दर्शायी गई है। ये मांस की इच्छा

International Research Journal of Human Resources and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor- 5.414, Volume 4, Issue 10, October 2017
Website- www.aarf.asia, **Email** : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

वाली होकर, मनुष्यों को अपने सुन्दर रूप से लुभा कर धोखे से उन्हें खा जाती थी । यक्ष आदि भी मनुष्यों को छल-प्रपञ्च से अपना ग्रास बना लेते थे । कई बार तो वे किसी नगर आदि में भी आतंक मचा देते थे, जिससे नगरवासी सम्पूर्ण नगर की सुरक्षा हेतु उनका भोजन निश्चित करके उनके स्थल पर बारी-बारी से मनुष्य भोजन हेतु भेज देते थे । इन वर्णनों से युक्षों की डाकू, लुटेरों आदि जैसी छवि प्रकट होती है । जैसे डाकू, लुटेरे नगर में उत्पात मचा देते हैं और सम्पूर्ण नगर को नष्ट होने से बचाने हेतु नगरवासी उनको 'कर' स्वरूप सामग्री वा धन उन्हीं के स्थान पर पहुँचा देते थे, उसी प्रकार का वर्णन यक्षों का प्रतीत होता है । इसी प्रकार एक चक्रा नगर में भीम भी बक राक्षस की सामग्री लेकर जाते दिखाई देते हैं । उनके मांसाहारी होने के कारण ही वे मानव समाज (नगरों) से दूर नगर के बाहर व वनों आदि में निवास करते प्रतीत होते हैं। अनुमानत: इस काल तक आते-आते सामान्यजन के हृदय से यक्षों के प्रति व श्रद्धा समाप्त हो चुकी थी अथवा यक्षजाति अपनी वह सम्मानजनक अवस्था जो रामायण-महाभारतकाल में प्रायश: चरम पर थी, को खो चुके थे ।

निवासक्षेत्र व स्थान

निवासक्षेत्र

यक्ष जाति प्राचीन साहित्यानुसार पर्वतीय क्षेत्रों में ही निवास करती थी । उसने शनै:-शनै: सम्पूर्ण भारत यहाँ तक कि लंका तक अपना प्रसार कर लिया था। हम वैदिक-साहित्य में उनका निवास एकान्त, निर्जन व पर्वतीय स्थलों पर ही पाते हैं, महाभारत काल तक के पर्वतों से उतरकर समतल स्थलों पर अपना प्रभाव व्याप्त कर चुके थे यथा-कुरुक्षेत्र आदि में । यह जाति वैदिक-साहित्य में नाममात्र ही प्रकट होती है, वर्णनों से विदित होता है कि रामायण व महाभारत काल तक यह जाति अपना प्रभाव व्याप्त कर चुकी थी, परन्तु बौद्ध व जैन कालीन समाज में यक्षों का प्रभाव अत्यधिक बढ़ चुका था । यक्ष-पूजा भी दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही थी । उनसे प्रभावित (व्याप्त) क्षेत्रों को जानने के लिए विभिन्न तथ्य बिन्दुओं के माध्यम से दर्शाए जा रहे हैं ।

(1) राजगृह (मगध) की हारीति नाम यक्षिणी का वर्णन मुख्यतया मिलता है । जो प्रारम्भ में मांस भक्षिणि थी परन्तु बाद में बुद्ध के कारण परिवर्तित होकर सन्तान-रक्षिका के रूप में पूजित हुई ।[29]

© **Associated Asia Research Foundation (AARF)**
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

International Research Journal of Human Resources and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor- 5.414, Volume 4, Issue 10, October 2017
Website- www.aarf.asia, **Email** : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

(2) कुमारस्वामी के अनुसार - महामयुरी-सूची में 'नंदी नगर' में 'नन्दी-वर्धन' दो यक्ष-युग्म का नाम प्राप्त होता है । यह नगर 'मगध' में माना जाता है ।[30]

(3) अलकानन्दा नगरी आलौकिक प्राणियों से व्याप्त रहती थी एवं श्रीलंका भी यक्षों से सम्पूर्ण थी ।[31]

(4) भरहुत के बौद्ध स्तूप में छः यक्ष, दो यक्षिणियों का वर्णन मिलता है सुपवसु यक्खों, विरुधको यक्खो, गंगिता यक्खो, सूचिलोम यक्खो, कुवेर यक्खो, अजकालक यक्खो, सुदसना यक्खी व चदा (चंदा) यक्खी, जिससे ज्ञात होता है कि भरहुत के आस-पास या भरहुत में भी यक्षों का अस्तित्व रहा होगा ।[32]

(5) **'सुत्तनिपात'**[33] के **आलवकसुत्त** में लिखा है कि जब बुद्ध आलवी 'आलवक' चैत्य में विहार कर रहे थे तो वहाँ एक 'आलवक' नामक यक्ष रहता था तथा गया नगर के टंकितमंच पर 'खर' और 'सूचिलोम' यक्ष निवास करते थे ।[34] गया का 'टंकितमंच' और 'आलवी' दोनों गंगा के दक्षिण में थे ।[35]

(6) राजगृह के गृध्रकूटपर्वत पर भी यक्ष, बुद्ध से मिलने आते हैं।[36]

(7) उत्तरकुरु क्षेत्र में एवं सुमेरू पर्वत पर वैश्रवण यक्षों सहित रहते हैं।[37]

(8) लंका में यक्ष नगर का नाम सिरीसावत्थु था ।[38] महावंश के अनुसार वे हिमालय के वासी हैं । कुछ लंका में रहते हैं ।[39]

(9) **ताम्रपाणि** नगर में कुवण्णा नामक यक्षिणि का वर्णन प्राप्त होता है । वहाँ से विजय राजा द्वारा निष्कासित किए जाने पर वह लंकापुरी में जाती है । तत्पश्चात् अपने ही किसी जाति वाले के साथ सीलोन के पहाड़ी क्षेत्र 'मलय' में आकर दोनों विवाह कर लेते हैं तथा पुलिन्द (एक जंगली कबीला) के पूर्वज बनते हैं ।[40]

(10) इस प्रकार चेतिया (Cetiya) नामक यक्षिणि जो डुमरक्खा (Dhumarakkha) नामक पर्वत पर रहती थी, उसे राजा पण्डुकाम्य धोखे से पकड़ लेता है[41] तत्पश्चात् यक्षिणि राजा की युद्ध में सहायता करती है । यक्षिणि के कहने पर वह लंका के पूर्व में (कालवेलह) यक्ष को नियुक्त कर देता है तथा 'चित्तराज' नामक यक्ष को 'अभय' सरोवर के समीप ।[42]

(11) इसके अतिरिक्त हमें भारत के विभिन्न स्थलों से विभिन्न यक्षों की मूर्तियाँ प्राप्त होती है । जहाँ जिस-जिस स्थल से वह मूर्ति प्राप्त होती है यह सम्भव है कि उस स्थल पर उस यक्ष-विशेष का अस्तित्व रहा हो । विभिन्न स्थानों से प्राप्त यक्ष-मूर्तियाँ है -

© Associated Asia Research Foundation (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

International Research Journal of Human Resources and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor- 5.414, Volume 4, Issue 10, October 2017
Website- www.aarf.asia, **Email** : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

1. परमाव (मथुरा) 2. यक्ष (मथुरा) 3. बरोदा यक्ष (मथुरा) 4. मथुरा के एक गांव में मनसा देवी की यक्षिणि मूर्ति । 5. भरतपुर के नोह ग्राम में प्राप्त यक्ष-मूर्ति । 6. पटना की यक्ष-मूर्ति तथा और भी यक्ष-मूर्तियाँ । 7. पटना के दीदारगंज में प्राप्त विश्वविख्यात 'चँवरधारिणी' की मूर्ति । 8. बेसनगर में यक्ष की विशाल मूर्ति । 9. शिशुपालगढ़ (भुवनेश्वर, उड़ीसा) की यक्ष-मूर्तियाँ । 10. राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली में, मुम्बई से प्राप्त यक्ष-मूर्ति । 11. राजघाट वाराणसी में प्राप्त त्रिप्रमुख यक्ष-मूर्ति (भारत कला भवन, काशी-हिन्दू विश्वविद्यालय में, पटना (इंडियन-म्यूजियम) की यक्ष-मूर्तियों पर 'भगवा अक्षतनीतिक' (कुबेर) और 'यक्ष सर्वत्र नन्दी' के नाम हैं ।

इस प्रकार इन वर्णनों से विदित होता है कि यक्ष जाति रामायण-महाभारत काल में विभिन्न पर्वतीय स्थलों पर निवास करती रहती थी परन्तु शनैः-शनैः समतल क्षेत्रों तक उनका प्रसार हो चुका था, जैसे कि उपर्युक्त वर्णनों से स्पष्ट है कि - अग्रोहा, राजगृह, मगध, भरहुत, गया, परमाव, मथुरा, पटना, बेसनगर, शिशुपालगढ़, राजघाट आदि स्थलों से विभिन्न मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं । इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि उन-उन स्थलों पर इन यक्षों का अस्तित्व रहा होगा । इसके अतिरिक्त लंका, डुमरक्खापर्वत, कपिलवस्तु, सातगिरिपर्वत का उनके निवास क्षेत्रों के रूप में स्पष्ट रूप से उल्लेख हुआ है ।

निवास स्थान

प्रायः उनके रहने के स्थान जल के समीप या शान्त झीलों के तट पर पाये जाते हैं । **देवधम्मजातक**[43] में वर्णन है कि कुबेर ने एक तालाब जल-राक्षस (यक्ष) को प्रदान किया हुआ था तथा कुबेर ने उसे अधिकार दिया हुआ था कि 'देव-धर्म' जानने वालों को छोड़कर, अन्य जो कोई इस तालाब में प्रवेश करेगें वे सब तेरे आहार होंगे । महाभारत में भी तालाबों अथवा सरोवरों के संरक्षक के रूप में यक्ष दिखाई देते हैं ।

कुछ यक्ष वन आदि में रहते हैं एवं उनके द्वारा अधिकृत वनक्षेत्र में प्रवेश करने वालों को वे खा जाते थे । **अप्पण्णकजातक**[44] में अमानुषकान्तार (वन) का उल्लेख मिलता है । इस कान्तार में प्रवेश करने वालों को यक्ष धोखे से मारकर उनको अपना ग्रास बना लेता था ।

पंचाबुधजातक[45] में श्लेषलोम नामक यक्ष की कथा है । वह तक्षशिला से वाराणसी के मार्ग में स्थित किसी वन में रहता था । यह वन उसके अधिकार में था तथा वह जिस भी मनुष्य को देखता उसी को मृत्यु को प्राप्त करवा देता

International Research Journal of Human Resources and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor- 5.414, Volume 4, Issue 10, October 2017
Website- www.aarf.asia, **Email** : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

था ।**तेलपत्तजातक** में इसी मार्ग में स्थित अमानुषकान्तार का उल्लेख हुआ है ।[46] वृक्ष आदि पर भी वृक्ष को भी अपना निवास बना लेते थे । महाभारत में इसी प्रकार का वर्णन है कि पवित्र वृक्ष को नहीं काटना चाहिए क्योंकि इन पर देवता, यक्ष आदि रहते हैं ।[47]**सुतनुजातक**[48] में '**मखादेव**' नामक यक्ष का वर्णन है कि वह वृक्ष पर निवास बनाकर रहता था। वृक्ष आदि पर निवास करने के कारण यक्षों को 'वृक्ष-देवता' भी कहा गया है ।[49] बुद्ध को सुजाता 'वृक्ष-देवता' समझकर पायस अर्पित करती है ।

जातककथाओं में भी उन्हें वृक्ष-देवता कहा गया है ।[50] यदि एक अर्ध-देवता का आदि के द्वारा निवास के लिए चुना गया वृक्ष काट दिया जाए तो वे बेघर हो जाते थे ।[51] एक यक्ष अपने वृक्ष के समीप एक पक्षी के द्वारा डाले गए बरगद के बीज से भय करता है क्योंकि उसे डर है कि उस बरगर के बड़े होने पर यह बरगद उसके वृक्ष को चारों तरफ फैल कर उसे दबा देगा ।[52]

बौद्धकालीन विवरणों से ऐसा प्रतीत होता है कि इस काल में यक्षजन वन, वृक्ष अथवा पोखर आदि के समीप निवास करते थे । वह वृक्ष, वन अथवा सरोवर उनका अधिकृत क्षेत्र होता था तथा उसमें प्रवेश करने वाले प्राणी पर 'वह उनका भोजन है', ऐसा अधिकत्तर समझते थे । वृक्ष-मात्र को भी उनके निवास के रूप में कहा है, जिसके नीचे एक चबूतरा-सा बना होता था तथा उसे ही 'चैत्य' संज्ञा दी गई थी ।

यक्षों की स्वभावगत विशेषताएँ

बौद्धसाहित्य के अनुशीलन व अर्वाचीन साहित्य के विश्लेषण से यक्षों की क्रूर व दयालु दोनों प्रकार के स्वभाव की छवि दृष्टिगोचर होती है, परन्तु बौद्धसाहित्य में उनके क्रूरस्वभावी होने का पक्ष अधिक दृढ़ है । वे दयालु छवि में भी दिखाई देते हैं किन्तु यह उनका स्वभाव (दयालु स्वभाव) बुद्ध के उपदेश के अनन्तर अर्थात् महात्माबुद्ध के प्रभाव से परिवर्तित होता है तथा वे क्रूर स्वभाव को त्यागकर सौम्य-जन बन जाते है । बौद्ध कथाओं में ऐसे उदाहरण अनेकशः प्राप्त हो जाते हैं ।

पालि भाषा में 'यक्ख' शब्द की व्युत्पत्ति जो बौद्ध व्याख्यानकर्त्ताओं ने दी है वो है - 'वह व्यक्ति जिसको बलि दी जाए।'[53] इनको मानव जाति से नहीं माना जाता था परन्तु ये देवों के समान उन्नत भी नहीं माने जाते हैं । इनमें से कुछ मानव सहयोगी होते हैं तो कुछ हानि पहुँचाने वाले ।

International Research Journal of Human Resources and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor- 5.414, Volume 4, Issue 10, October 2017
Website- www.aarf.asia, **Email** : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

दीघनिकाय में **आटानाटियसुत** में इन दोनों प्रकार के यक्षों का वर्णन मिलता है । स्वयं यक्षों के अधिपति वैश्रवण महाराज भगवान् बुद्ध से कहते हैं कि बहुत से यक्ष आपमें विश्वास रखते हैं और कुछ नहीं । भगवान् प्राणिहिंसा न करने के लिए धर्मोपदेश करते हैं- चोरी न करने के लिए, व्यभिचार न करने के लिए, असत्य न बोलने के लिए धर्मोपदेश करते हैं, परन्तु जो मद्यपान से विरत नहीं है एवं जो पापकर्म में लिप्त है वे यक्ष आपके (बौद्ध धर्म) विरुद्ध ही हैं । तत्पश्चात् भिक्षुओं व भिक्षुणियों की क्रूर यक्षों से रक्षा के लिए 'आटानाटियसुत्त' का विधान करते हैं ।

इसके अतिरिक्त उनका मनुष्य-भक्षी होने का वर्णन अनेकशः प्राप्त होता है ।[54] किन्तु यक्षिणियाँ यक्षों की तुलना में अधिक क्रूर प्रतीत होती हैं । वे अपने रूप-जाल में पुरुषों को फंसा कर अपना आहार बनाती थी ।[55]

वे अपना आहार प्राप्त करने के लिए कई बार सम्पूर्ण नगर में उत्पात मचाते थे। अतः उनके उत्पात को रोकने के लिए अधिकतर उनके लिए नियमानुसार बलि दी जाती थी ताकि एक व्यक्ति को भोजन के रूप में सौंपकर सम्पूर्ण नगर की रक्षा की जा सके ।[56]

कई बार वे क्रूरता की सीमा को भी लांघ जाते थे, मंगल-बुद्ध कथा में वर्णन है कि 'खरदाठिक यक्ष' बाह्मणवेष को धारण कर एक दानी महात्मा से उनके दोनों बच्चे दान में माँगकर उसी के समक्ष उन दोनों बच्चों को अपना आहार बना लेता है ।[57] अमानुषकान्तार ऐसे ही नरभक्षी यक्षों के लिए प्रसिद्ध था ।[58] नरभक्षी यक्षों में राजगृह की 'हारिती' प्रसिद्ध है ।[59]

इसी प्रकार का वर्णन आगे महावंश में भी मिलता है - अनुराधपुर के राजा सिरिसंघबोधि ने दो साल के लिए राज्य छोड़ दिया । रत्तकी यक्ष ने गांव में लाल बुखार अथवा प्लेग फैला दिया। यदि इससे ग्रस्त अपने रोग विषय में कहते तो वे तत्काल मृत्यु के ग्रास बन जाते । अन्त में राजा ने उस यक्ष के समक्ष अपने को उसके आहार के लिए प्रस्तुत कर दिया तथा यक्ष ने उस रोग को समाप्त कर दिया ।[60]

एक अन्य स्थल पर वर्णन है कि एक यक्ष बुद्ध को मारने दौड़ता है क्योंकि उनके कारण यक्षों को बलि प्राप्त नहीं हो पाती थी ।[61] यक्षों के दयालु स्वभावशील होने की भी अनेक कथाएँ प्राप्त होती हैं । लेकिन बुद्ध के प्रभाव में आने वाले यक्ष ही बहुशः दयालु दर्शाए गए हैं अथवा यह भी कह सकते हैं

© **Associated Asia Research Foundation (AARF)**
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

International Research Journal of Human Resources and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor- 5.414, Volume 4, Issue 10, October 2017
Website- www.aarf.asia, **Email** : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

कि वही यक्ष बुद्ध के अनुयायी हुए जो धर्मशील थी । अधिकांश स्थलों पर यक्षों को बोधिसत्त्वों के सहायक वा संरक्षक रूप में पाते हैं ।[62]

इसी तरह **मत्स्यजातक** में बोधिसत्त्व की प्रार्थना पर "नागों और यक्षों के अनुभाव से असमय ही आकाश में काले-काले बादल घिर आये ।"[63] **महिषजातक** में एक यक्ष बोधिसत्त्व गज को परेशान करने वाले दुष्ट वानर से उसकी रक्षा करता है ।[64]

उपर्युक्त वर्णनों से कई तथ्य दृष्टिगोचर होते हैं । प्रथमत: तो इस काल में जन-समाज में जो यक्ष-छवि विद्यमान थी, उनका अनुमान हमें हो जाता है । जैसा कि वर्णन है कि कुछ यक्ष दयालु व संरक्षक थे एवं कुछ इसके ठीक विपरीत । जो यक्ष दयालु व संरक्षक थे, वे कुबेर के अधिकार में थे, जो क्रूर स्वभावशील थे, वे न कुबेर की आज्ञा को मानते थे न ही किसी के प्रति सम्मान व दयाभाव रखते थे, इस तरह से प्रतीत होता है कि यक्ष-समाज के दो तरह के विभाग हो चुके थे, एक समाज कुबेर के संरक्षण में था तथा अन्य स्वच्छन्द प्रवृत्ति का था, जो समाज को हानि पहुँचाता रहता था । कुबेर के संरक्षण वाले समाज के प्राय: मानव जाति से तथा बुद्ध से सुसम्बद्ध थे तथा वे बुद्ध की सभाएं भी सुनते थे । इसके अतिरिक्त कई क्रूर यक्षों के, बुद्ध के प्रभाव से हृदय परिवर्तन की कथाएँ भी प्राप्त होती हैं । इन दोनों बातों से ऐसा प्रतीत होता है कि उस काल में बुद्ध का प्रभाव सर्वत्र फैला हुआ था, यहाँ तक कि यक्ष-समाज भी उससे अछूता नहीं था । यहाँ पर इस प्रकार के वर्णनों की दो सम्भावनाएँ, व्यक्त की जा सकती हैं कि या तो बुद्ध का अधिक प्रभाव होने और उसका और अधिक प्रभाव बढ़ाने के अभिप्राय से साहित्यकारों ने यक्षों को क्रूर आदि छवियों में अभिलिखित किया अथवा दूसरी यह कि उस समय जन समाज और यक्ष-समाज भी अधिक दुर्गुणों से व्याप्त हो चुका था, जिसके कारण बुद्ध का इतना प्रभाव बढ़ा ।

इसके अतिरिक्त यह भी विदित होता है कि जो दूसरा यक्ष-समाज जो था (जो बुद्ध से वैर-भाव रखता था, या जो कुबेर के संरक्षण में नहीं था) एक तो वह बुद्ध से वैर-द्वेष भाव रखता था, दूसरा उनमें एक सेना-गठन हो चुका था जैसा कि आटानिटायसुत्त के वर्णन से ज्ञात होता है जहाँ कहा है कि यदि कोई यक्ष, यक्ष सेनापति, यक्ष महामात्य आदि किसी भिक्षु वा भिक्षुणी को कष्ट पहुँचाए तो उन्हें किन-किन यक्ष अथवा यक्षसेनापतियों का स्मरण करना चाहिए । यह वर्णन स्पष्ट रूप से घोतित करता है कि प्राचीन यक्ष-समाज दो भागों में बंट

© **Associated Asia Research Foundation (AARF)**
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

International Research Journal of Human Resources and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor- 5.414, Volume 4, Issue 10, October 2017
Website- www.aarf.asia, **Email** : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

चुका था, एक पक्ष कुबेर वाला था, व अन्य यक्ष-समाज क्रूर प्रवृत्ति का था । इस क्रूर प्रवृत्ति के समाज का बुद्ध व कुबेर दोनों ने ही बहिष्कार कर रखा था ।

उपर्युक्त वर्णनों के आधार पर निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि इस काल में समाज में यक्षों की दोनों ही छवियाँ प्राप्त होती हैं तथा साथ ही यह ज्ञात होता है कि उनके क्रूर स्वभाव व बुद्ध की बढ़ती महत्ता के साथ-साथ यक्ष-समाज के ह्रास व पतन के बीज यहाँ से अंकुरित होते प्रतीत होते हैं ।

इस प्रकार ज्ञात होता है कि कुछ यक्ष मानव-जाति के संरक्षक व हितैषी भी थे । प्रायशः उनके संरक्षक रूप में स्थिति के कारण ही जनसाधारण ने उन्हें उस के परितोषिक अथवा श्रद्धा व्यक्त करने के लिए उनकी पूजा करनी आरम्भ कर दी ।

बौद्ध साहित्य के अनुशीलन के आधार पर कहा जा सकता है कि इस काल में यक्ष-जाति का प्रभाव जन-सामान्य में पहले की अपेक्षा बढ़ चुका था । महाभारत व रामायण काल में जिस यक्ष जाति को दुर्गम स्थलों का निवासी कहा गया है, अब वही यक्ष जाति सामान्य समाज में स्थान पर चुकी थी तथा मानव जाति के नगरों, ग्रामों, उद्यानों, सरोवरों आदि के संरक्षकों के रूप में विद्यमान थी तथा साथ ही उनके विषय में विभिन्न प्रकार की अनेक धारणाएँ प्रचलित हो चुकी थी । यह जाति दुगर्म-पर्वतीय-स्थलों से उतरकर सामान्य जन के बीच ही विद्यमान थी परन्तु फिर भी उन्हें अमानुष कहकर उन्हें मनुष्य जाति से भिन्न ही बताया है, जहाँ उनके संरक्षक के रूप में वर्णन प्राप्त होते हैं, वहीं भक्षक के रूप में भी वे विद्यमान हैं । उन्हें प्रायः नरभक्षी ही दर्शाया गया है । कुछ यक्ष स्वभावतः ही संरक्षक थे, तो कुछ अत्यन्त क्रूर थे । वैश्रवण के आश्रय में रहने वाले यक्ष तो संरक्षक के रूप में विद्यमान थे परन्तु कुछ यक्ष स्वच्छन्द रूप से विचरण करते थे, जो वैश्रवण का कहना नहीं मानते थे तथा वे ही समाज को हानि पहुँचाते थे । इस प्रकार यक्ष-समाज में विभाजन-सा प्राप्त होता है । इसके उपरान्त कुछ यक्ष बुद्ध के प्रभाव से परिवर्तित हो जाते हैं तथा मनुष्य-जाति के पूजित संरक्षक भी बन जाते हैं ।

यहाँ यक्षों को वृक्ष-देवता भी कहा गया है तथा सन्तान-प्राप्ति हेतु उनसे अनेक प्रार्थनाएँ व उनकी पूजा की जाती थी । इस काल में यक्ष-पूजा सामान्तया अत्यन्त बढ़ गई थी तथा साथ ही उन पर बुद्ध का बढ़ता प्रभाव भी दृष्टिगोचर

International Research Journal of Human Resources and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor- 5.414, Volume 4, Issue 10, October 2017
Website- www.aarf.asia, **Email** : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

होता है । हालांकि विस्तार से इसके विषय में अध्याय में पहले ही वर्णन किया जा चुका है ।

किन्तु एक विशिष्ट एवं ध्यातव्य व विचारणीय तथ्य यह है कि हालांकि इस काल में यक्ष जाति व उनकी परम्पराएं एवं पूजा-पद्धति अथवा उनका प्रभाव समाज में पूर्वकाल की अपेक्षा अत्यन्त बढ़ गया था, परन्तु इन सब वर्णनों के विश्लेषण से ऐसा प्रतीती होता है कि इस काल तक आते-आते उनकी वो गुणवत्ता, सम्मानजनक स्थिति, एवम् उनकी उत्तम चारित्रिक विशेषताएँ, संक्षेप में कहें तो उनकी संस्कृति का वो उच्चत्तम-स्तर, जो वैदिक, रामायण, महाभारत काल में दृष्टिगोचर होता है, वह पूर्व की अपेक्षा कम हो गया तथा जिसके कारण इस काल में उनकी संस्कृति (जाति) के ह्रास के बीज कहीं न कहीं सूक्ष्म रूप से यहाँ से आरम्भ हो चुके थे ।

संदर्भ सूची

[1]MalaLaksekera : Dictionary of Pali Proper names, p. 678

[2] वही, पृ. 678

[3] वही, पृ. 678

[4] वही, पृ. 675

[5] वही, पृ. 674

[6] अंगुतरनिकाय : 11.38 (The Book of Gradual Sayings, Vol. II, p. 44)

[7] मज्झिमनिकाय : 1.252; सुमंगलविलासिनी; 1.264

[8] मज्झिमनिकाय : 1.386 (The Collection of Middle Length Saying) Vol. II, p. 53

[9] संयुतनिकाय : 1.54 (The Book of Kindred Sayings, part-1, p. 78)

[10] जयद्दिशजातक, पृ. 33

[11]Malalaksekera, Dictionary of Pali Proper Names, p. 675

[12] जातककथा, प्रथम खण्ड, देवधम्मकथा, पृ. 213

[13]Rev. W'Ward : History, Literature and mythology of Hindoos, Vol. 111, p. 183

[14]महावंश, VII. 9-39

[15] दीघनिकाय, महावग्ग, पायासिराजञ्यसुत, पृ. 567

[16] वही, सीलक्खन्धवग्गो, पृ. 103 : तेन खो पन समयेन यक्खो महन्तं आयोकूटं आदाय आदित्तं समपज्जलितं सजोतिभूतं अम्बठ्ठस्स माणवस्स उपरि वेहासं ठितो होती ।।

[17] जातक, प्रथम खण्ड, मंगलबुद्ध-कथा, पृ. 93

[18] वही, अप्पणकजातक, पृ. 177

© Associated Asia Research Foundation (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

International Research Journal of Human Resources and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor- 5.414, Volume 4, Issue 10, October 2017
Website- www.aarf.asia, **Email** : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

[19] वही, पंचाबुधकथा, पृ. 401

[20] जातक, तेलपत्तकथा, पृ. 559

[21] पादकुशलमाणवजातक, (E.B. Cowell : The Jataka, p. 298)

[22]L.D. Barnett : The Antagada – Dasa, Pp. 67, 69-71

[23] वी.ए. साल्तर : द वाइल्ड ट्राइब्स ऑफ एन्शेन्ट हिस्ट्री, पृ. 128

[24](i) Rhys Davids and Stede : Pali English Dictionary, PTS 1921
(ii) Malalalsekera : Dictionary of Pali Proper Names, P. 675-76
(iii) R.A. Selector : Encyclopedia of Indian Culture, Vol. V,p. 1652

[25] पंचाबुधजातक, पृ. 400–402

[26] जातक, प्रथम खण्ड, तेलपत्तजातक, पृ. 559

[27]John Garrett Jones : Tales and Teachings of Buddha, p. 103

[28]दीघनिकाय, महावग्ग, पायासिराजञ्ञसुत, पृ. 566–567

[29]महावंश, XII. 21

[30]Coomarswamy : Yaksas, Part-1, p. 3

[31]J.P. Sharma : Jain Yakshas, p. 44

[32]वही, पृ. 44–45

[33]The Book of Kindred sayings, Yakkha Suttas (Suciloma) Part-1, pp. 264-265

[34] वही, पृ. 275

[35] श्री हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय' : बौद्ध धर्म और बिहार, पृ. 68

[36] दीघनिकाय, महावग्ग, आटानिटायसुत्त, पृ. 748

[37] वही, पृ. 752

[38]वी.ए. साल्तर : द वाइल्ड ट्राइब्स ऑफ एन्शेन्ट इंडिया, पृ. 128

[39] वही, 121 एवं देखें Amal Sarar : Snake Cult in Indian Religion, p. 390, Modren Review, Vol. III, 1962

[40] महावंश, VII. 36-38

[41] वही, X.53-63

[42] वही, X. 53-88

[43]जातक, प्रथम खण्ड, देवधम्मजातक, पृ. 212

[44] वही, अप्पणकजातक, पृ. 177

[45]वही, पंचाबुधजातक, पृ. 401

[46] जातक, तेलपत्तजातक, पृ. 559

[47] महाभारत, XII. 69-40-41

© Associated Asia Research Foundation (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

International Research Journal of Human Resources and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor- 5.414, Volume 4, Issue 10, October 2017
Website- www.aarf.asia, **Email** : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

[48] सुतनुजातक, पृ. 398
[49] जातक, 111.309, 345; (विमानवत्यु) 1.9 PVA (विमानवत्थु टीका), 5
[50] रुक्खधम्मजातक, (E.B. Cowell : The Jataka, Vol. III-IV, pp. 181-182)
[51]E.B. Cowell : Teh Jataka, Vol. III-IV, Kotisimbali Jataka, pp. 239-40.
[52]John Garrett Jones; : Tales and Technigs of Buddha. p. 105
[53]J.P. Sharma : Jain Yaksha, p. 44
[54] दीघनिकाय, महावग्गा, पायासिराजऽऽसुत, पृ. 536-537
[55]तेलपत्तजातक, पृ. 96
[56]द्र., सुतनुजातक, अयकूटजातक एवं तेलपत्तजातक
[57]जातक, प्रथम खण्ड, मंगलबुद्ध कथा, पृ.93
[58] वही, लोसकजातक, पृ. 358 एवं द्र. पंचाबुधजातक, पृ. 401-402
[59] महावंश, XII. 21
[60] महावंश, XXXVI (82-90), पृ. 262-263
[61] द्र. अयकूटजातक
[62] जातकमाला, विश्वन्तरजातकम, श्लोक 51 : वितानाशोभां दधिरे पयोदाः सुखः सुगन्धिः प्रसवौ प्रववौ नभस्वान् । परिश्रमक्लेशममृष्यमाणा यक्षाश्च सञ्चिक्षिपुरस्य मार्गम् ।।
[63] जातकमाला, मत्स्यजातकम् : श्लोक 8 के उपरान्त : अथ तस्य महात्मनः पुण्योपचयगुणात्सत्याधिष्ठान बलात्तदभिप्रसादित देवनागयक्षानुभावच्च समन्ततस्तोयाबलमिबम्बा।।
[64] वही, महिषजाकम, श्लोक 4 से अन्त तक ।

© **Associated Asia Research Foundation (AARF)**
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.